International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बिहार राज्य के माध्यमिक स्तर पर समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अभिभावक–छात्र सम्बन्धों का एक अध्ययन।

सरोज कुमार[1], डॉ.नीरू वर्मा[2], डॉ संजय कुमार[3]

[1]शोधार्थी–भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, (राजस्थान
[2]एसो.प्रोफेसर, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान
[3]एसो.प्रोफेसर, ए.टी.एम.एस कॉलिज ऑफ एजुकेशन, हापुड़, उ.प्र.

सारांश

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक गिन्सवर्ग का कथन है कि सभ्यता और सुसंस्कारिता के अन्तर को समझा जाना चाहिए। सभ्यता नागरिक कर्तव्यों के परिपालन तथा व्यवहार में शिष्टाचार बरतने भर से पूरी हो जाती है किन्तु संस्कृति अपनाने पर मनुष्य के दृष्टिकोण, चरित्र एवं लक्ष्य में आदर्शवादिता का ऐसा समावेश करना पड़ता है, जिसे उसे अपने को गौरवान्वित अनुभव करने तथा दूसरे के लिए अनुकरणीय प्रस्तुत कर सकने का अवसर मिल सके। सुसंस्कृत परिवारों के बीच बालकों के व्यक्तित्व के विकास की बहुत कुछ सम्भावना रहती है। बालक जो देखते हैं वही सीखते–समझते हैं और वैसा ही अनुकरण करने लगते हैं। इस बात की पुष्टि करते हुए प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक गिन्सवर्ग ने अपनी पुस्तक ''साइकोलाजी ऑफ सोसाइटी'' में व्यक्ति और समाज की सबसे बड़ी विशिष्टता एक ही बताई है कि ''सुसंस्कारिता का वातावरण बने, परम्परा निभे और उसको हर सदस्य अनुकरणीय अभिनन्दनीय कहलाने का श्रेय प्राप्त करे।'' यह माना जाता है कि बालक कोरे कागज की तरह होते है उसको जाने या अनजाने में अभिभावक बहुत कुछ सीखा देते है। आधुनिक अभिभावक–बाल कानून माता–पिता और अपरिपक्व बच्चों के बीच संबंधों का नियंत्रित करते हैं। बालकों से घर की शोभा बढ़ जाती है, चहल–पहल रहती है और मन प्रसन्न रहता हैं। अभिभावकों की एक अपेक्षा रहती है कि बालक बड़ें होने पर वे परिवार के लिए सहायक सिद्ध होंगे तथा समाज व परिवार में श्रेय–सम्मान भी मिलेगा। यदि बालक का व्यक्तित्व अवांछनीय स्तर का हो जाए तो स्थिति दुखद एवं सामाजिक विकास नही करने वाली होगी ।

Keywords: माध्यमिक विद्यालय स्तर पर समायोजन एवं अभिभावक–छात्र सम्बन्ध।

प्रस्तावना (Introduction) :- संस्कृति कुछ सीमित रीति–रिवाजों, रहन–सहन तक सीमित नही होती वरन् धर्म, दर्शन, साहित्य, कला, समाज और व्यक्तिगत समायोजन के सम्पूर्ण वृत्त का नाम संस्कृति है। प्रसिद्ध वाडल्वी ने अपनी पुस्तक 'मैटर्नल केयर एण्ड मेण्टल हैल्थ' में बताया कि बालक 5 वर्ष तक बहुत कुछ सीख लेता है और जीवन के प्रति एक नजरिया विकसित कर लेता है। आज का समाज उन्हें महत्व दे रहा है जिनसे समाज को ही खतरा है तथा आश्चर्य की बात यह है कि समाज के आशीर्वाद से ही वे उच्च पदों तक पहुँचने में कामयाब हो रहे हैं। आज समाज बबूल को पूज रहा है, जो काँटो से लथपथ है। ऐसी स्थिति में अभिभावक का उत्तरदायित्व और भी चुनौतीपूर्ण हो जाता है। अभिभावक को अपने घर में ऐसा वातावरण सृजित करना होगा कि उसकी आँच से समाज की कुरीतियाँ भस्म हो सकें तथा अपने बालकों को इस प्रकार शिक्षित व दीक्षित करना होगा कि उनमें प्रतिरोध करने की भावना व अदम्य साहस पैदा हो सके। ज्ञान, संस्कार, सामाजीकरण, दया, धैर्य, पराक्रम, राष्ट्रीयता, उत्तरदायित्व, कर्त्तव्यनिष्ठा, सहयोग, धर्मनिरपेक्षता, अनुशासन, आत्मनियंत्रण आदि मूल्य किसी विधायिका, न्यायपालिका या किसी सरकारी अफसर के कार्यालय में नहीं सिखाए जाते वरन् इनके सिखाने का एक मात्र स्थान घर होता है और सिखाता अभिभावक ही है। अतः अपने घर के बच्चों में वे सारे संस्कार विकसित करने होंगें जिससे वे सफल नागरिक बनकर समाज को समुन्नत कर सकें व राष्ट्रीय गौरव में भी वृद्धि कर सकें। अपने बुनियादी शिक्षा के मन्तव्य के पक्ष में महात्मा गाँधी ने कहा था कि बुनियादी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसमें बच्चा भाषा, गणित व विषयों को पढ़ने के अलावा कुछ ऐसा भी सीखे जिससे वह तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर हो सके। अतः अभिभावक का यह शिक्षा के साथ–साथ सामाजिक दायित्व भी है कि वे शिक्षित ही नहीं आत्मनिर्भर व स्वावलम्बी नागरिक पैदा करने में सहयोग करें। अभिभावक समय व समाज की आवश्यकता के अनुरूप अपने बालकों को तैयार करता है।

प्रस्तुत शोध में विभिन्न स्थितियों से संबंधित वास्तविक समस्यायें तथा उनसे संबंधित संभव व्यावहारिक समाधान पर विचार किया गया है। उच्च नैतिक जीवन का निर्माण अपने आप नहीं हो सकता बल्कि समायोजन का अभ्यास करने के लिए भारी श्रम करना पड़ता है। कच्ची धातु को मजबूत फौलाद बनाने के लिए उसे अनेक भट्टियों में होकर गुजरना पड़ता है इसी प्रकार संभावित व्यवहारों का

विश्लेषण समाज–शास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक दृष्टि से किया गया है। कहीं–कहीं उनके औचित्य तथा अनौचित्य पर टिप्पणी भी की गयी है। नैतिक व्यवहार का निष्कर्ष निर्धारित करने के लिए यह आवश्यक है कि अभिभावक अधिक से अधिक कष्ट उठाकर किसी भी कीमत पर नैतिक व्यवहार करे। अभिभावक का सामान्य व्यवहार तो अधिकतर ठीक होता है।

भारत में माध्यमिक शिक्षा **(Secondary Education in India):-** माध्यमिक शब्द का अर्थ है – मध्य की' से है। माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक और उच्च शिक्षा के मध्य की शिक्षा है। अंग्रेजी में इसके लिए सेकेण्डरी शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसका अर्थ है–दूसरे स्तर की, पहले स्तर की प्राथमिक और उसके बाद दूसरे स्तर की यह सेकेण्डरी शिक्षा है। हमारे देश में प्राचीन और मध्यकाल में शिक्षा केवल दो स्तरों में विभाजित रही–प्राथमिक और उच्च शिक्षा। भारत में प्राथमिक शिक्षा का श्रीगणेश आधुनिक युग में ईसाई मिशनरियों ने किया। भारत में आधुनिक माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप निश्चित करने में सबसे बड़ी भूमिका सन् 1854 में वुड के घोषणा पत्र की रही। इस प्रकार कहा जा सकता कि औपचारिक रूप शिक्षा की संरचना की शुरूवात थी। उसमें माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य और पाठ्यक्रम का निर्धारण किया गया। सन् 1882 में ब्रिटेन सरकार के भारतीय शिक्षा आयोग का गठन किया गया। इस आयोग ने माध्यमिक शिक्षा को दो भागों में विभाजित करने का सुझाव दिया –

(1) साहित्यिक शिक्षा।

(2) व्यावसायिक शिक्षा।

संबंधित साहित्य के स्रोत :– शोध के क्षेत्र में सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना नितान्त आवश्यक है। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता को उद्देश्यों की पूर्ति हेतु समस्याओं के निरूपण में सहायता मिलती है। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के महत्व को स्पष्ट करते हुए जे० एम० एल० के अनुसार – "नियमानुसार किसी भी शोध प्रबन्ध का सम्बन्धित विवरण तब तक उपयुक्त नहीं समझा जाता है जब तक उस शोध से सम्बन्धित साहित्य किस आधार विवरण में नहीं होता है।" सन्दर्भ साहित्य का ज्ञान ही शोधकर्ता को ज्ञान के उस शिखर तक ले जाता है जहां पर अपने क्षेत्र के नवीन एवं परस्पर विरोधी उपलब्धियों का परिचय प्राप्त करता रहता है।

समायोजन (Adjustment) :– मस्तिष्क जीवन की धुरी है। वातावरण से प्रभावित होकर यह जितना निराशा, दुःख, हर्ष और आनन्द प्राप्त करेगा, उसका प्रभाव सीधे तौर पर शरीर पर पड़ता है। यह अवस्था छात्रों के बनने और बिगड़ने की पहली और प्रमुख अवस्था है इसलिए **मनोवैज्ञानिक स्टेनले हॉल** ने इसे आँधी –तुफान का काल भी कहा है। इस अवस्था में छात्रों में कुछ करने का जुनुन होता है, तथा वह अपनी वर्चस्व दिखाना चाहता है तथा इसी अवस्था में उनमें नयी नयी आदते विकसित होने लगती है। अगर माता–पिता इस अवस्था में छात्रों पर सही रूपों में सही समय पर ध्यान नहीं देंगे तो वह छात्र अपने लक्ष्यो से भटक कर गलत रास्ते अपना कर अपना जीवन अंधकार कर लेंगे। जिसके एवज वह एक असमाजिक कारक के रूप में समाज एवं राष्ट्र को प्रगति के रास्ते में एक अवरोधक का कार्य करेंगे।

अभिभवक–छात्र के सम्बन्ध **(Parent-students Relationship):–** बालक की सामर्थ्य स्वतः ही विकासशील होती है। बालक में सदगुणों एवं दुर्गुणों का विकास छोटी आयु में होता है। तत्त्वज्ञानी मनीषियों का कथन है कि 'एक आँख प्यार की दूसरी सुधार की' रखी जाए। अभिभवक–छात्र के सम्बन्धों और समस्याओं के अध्ययन से नई पीढ़ी और सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी लाभ हो सकता है। अभिभवक शान्त, धैर्य, और समर्पण का अनोखा प्राणी होता है। वह कम–से–कम आवश्यकताओं की पूर्ति कर परिवार को दिशा देता है ताकि समाज के द्वारा शिक्षा का प्रचार और प्रसार निर्बाध गति से चलता रहे। अभिभावक समाज से कमियों को, कुप्रथाओं को व कुसंस्कारों को हटाता है और बालक में समता को व्यवस्थित करने की कौशिश करता है। समाज के अन्दर मूल्यों का समावेश, सभ्यता और संस्कृति का संरक्षण और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के भाव का संचरण अभिभवक के द्वारा ही होता है। "लिंटन 1955 पृ0–279 का मत है कि व्यक्तित्व का गठन "कार्य व्यवहार" के सिद्धान्त के आधार पर होता है। इसमें आयु, लिंग, व्यवसाय, समाज, परिवार और अनुकूलता आदि के प्रभाव को प्रमुखता दी जाती है। इस प्रकार से यह अधिक महत्व होता है। इन सदस्यों में परिपक्व अनुभवी और दक्ष सदस्य का महत्व अधिक बढ़ जाता है। यही व्यक्तित्व अभिभवक में होते हैं, जो अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व से परिवार के सदस्यों की आदतों, रुचियों और मनोवृत्तियों को दिशा देते हैं तथा समाज में सहिष्णुता सहयोग और सहभागिता आदि प्रजातान्त्रिक गुणों का विकास करने में सहयोग देते हैं।

शैक्षिक शोध की आवश्यकता **(Need of the Educational Research):** – अभिभावक–छात्र की वर्तमान दशा निम्न स्तर पर है। यह सत्य है कि आज अभिभावक सामान्यतः अपने बालक से असन्तुष्ट है साथ ही बालक भी अपने अभिभावक से असन्तुष्ट है। यद्यपि आज से कुछ वर्ष पहले अभिभावक की आर्थिक दशा वास्तव में खराब थी, तब भी उनका व्यवहार इस तरह का नहीं था। वे छात्रों के भविष्य व संस्कार को प्राथमिकता देते ओर गरिमापूर्ण छवि बनाए रखते थे। वे समाज के सबसे आदरणीय पात्र थे। आज उनकी आर्थिक दशा भी आकर्षक हो गई लेकिन वे अन्य कार्यो में ज्यादा लिप्त पाए जाते हैं। जैसे–जैसे सुविधाएँ बढ़ती जा रही है, वैसे–वैसे

तृष्णा का आकार भी बढ़ता जा रहा है। आज का अभिभावक बेचैन है तथा पुराने समय के अभिभावक से भिन्न है। इस वर्ग के लोग परीक्षा परिणामों में हेर–फेर करवाने, दलाली करने तथा लाभ के लिए राजनैतिक दलों से साँठ–गाँठ करने से नहीं चूकते हैं। ऐसे कामों को वे धनोपार्जन का अतिरिक्त साधन मानते हैं। इस क्षेत्र में आज शोध की बहुत आवश्यकता है।
प्रस्तुत शोध विषय का शीर्षक – ''बिहार राज्य के माध्यमिक स्तर पर समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अभिभावक–छात्र सम्बन्धों का एक अध्ययन।''

अध्ययन उद्देश्य (**Objectives of Research**) :– किसी भी शोधकर्ता का कार्य उसके उद्देश्यों में समाहित व निर्देशित होता हैं। वस्तुतः प्रस्तुत अध्ययन के प्राप्य उद्देश्य नालन्दा व पटना जिलों के मण्डल के माध्यमिक स्तरीय विद्यालयों के छात्रों के संदर्भ में शोधकर्ता द्वारा निम्न उद्देश्य लिए गए हैं –

01. माध्यमिक स्तर के छात्रों के समायोजन पर अभिभावक–छात्र सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन करना।
02. माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक–उपलब्धि पर अभिभावक–छात्र सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना : – इस अध्ययन संबंधित परिकल्पना का निर्माण शोधकर्ता द्वारा शून्य परिकल्पना के रूप मे किया है। सामान्यतः जिन क्षेत्रों मे अध्ययन का अभाव होता है वहां शून्य परिकल्पना की जाती है। इसे सांख्यिकीय परिकल्पना भी कहते है।

इस आधार पर अध्ययन के प्राप्य उद्देश्यों में प्रयुक्त शून्य परिकल्पनाओं का विवरण निम्नवत हैं –

1. छात्रों के लिए माँ की स्वीकार्यता का समायोजन से कोई महत्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है।
2. छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का धार्मिक मूल्य से कोई महत्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है।
3.

जनसंख्या :- जनसंख्या से अभिप्राय उन सभी व्यक्तियों, वस्तुओं अथवा तथ्यों के समूह से होता है, जो पूर्व परिभाषित विशेषताओं के क्षेत्र में आता है। प्रस्तुत अध्ययन में कारक संरचना के आधार पर बहु–स्तरित दैव न्यादर्श विधि द्वारा बिहार प्रदेश के पटना मण्डल के माध्यमिक स्तर के 60 छात्रों का चयन किया गया।

चर : अनुसंधान कार्य में चरों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मनोविज्ञान की भाषा में व्यवहार तथा व्यवहार को उद्दीप्त करने वाले सभी कारकों को 'चर' नाम दिया जाता है। 'चर' को परिभाषित करते हुए – **गैरेट** ने बताया कि – ''चर वह लक्षण या गुण है जिसकी मात्रा में परिवर्तन होता है और यह परिवर्तन किसी माप या आयाम पर होता है।''

डी0 अमेंटो (D'Amato) के अनुसार –''चर किसी वस्तु, घटना या प्राणी का मापन के योग्य गुण या लक्षण है।''
अतः सारांश रूप में कह सकते कि चर शोध अध्ययन में महत्वपूर्ण होते है। सामान्य रूप से किसी भी शोध में चरों का प्रयोग किया जाता है। चरों कों मुख्य रूप से चार भाग में विभाजित किया जाता है –
1. स्वतंत्र चर। 2. आश्रित चर। 3. मध्यवर्ती चर। 4- जैविक चर।

शोध–अध्ययन के चर : – शोध–अध्ययन में निम्नलिखित चरों का प्रयोग किया गया – मुख्य चर: – माध्यमिक *स्तर, समायोजन, व मूल्य* / आश्रित चर : – *शैक्षिक* उपलब्धि, अभिभावक–छात्र सम्बन्ध।

न्यादर्श का चयन:– शोध कार्य में न्यादर्श का विशेष महत्व होता है। इसके बिना शोध कार्य पूर्ण नहीं किया जा सकता है। न्यादर्श का तात्पर्य सम्पूर्ण अध्ययन के लिए ऐसे भाग को अलग करने से होता है जो सम्पूर्णता का प्रतिनिधित्व करता है और सम्पूर्णता की अपेक्षा छोटा होता है। इस प्रकार कुल छः. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के 106 छात्रों का चयन किया, जिसमें से अन्तिम रूप से पूर्ण शुद्ध व सही पाए 100 छात्राओं के न्यादर्श को शोध अध्ययन हेतु चयनित किया गया जिनका विवरण निम्नलिखित है –

सं0	विद्यालयों की स्थिति	न्यादर्श के लिये चुने विद्यालयों का नाम	छात्रों की संख्या	चयनित छात्रों की संख्या
		शहीद राजेन्द्र प्रसाद सिंह, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गर्दनी बाग, पटना,	27	25

1.	पटना	बिहार।		
2.		राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, गर्दनीबाग, पटना – 2, बिहार।	28	25
3.	नालन्दा	रामबाबू हाई स्कूल, हिलसा, नालन्दा, बिहार।	25	25
4.		नेताजी श्री सुभाष हाई स्कूल, इस्लामपुर, नालन्दा, बिहार।	26	25
कुल विद्यार्थियों की संख्या			106	100

उपकरण (Tools): यह बात सर्वविदित हैं कि बिना उपकरण के अनुसंधान प्रक्रिया पूर्ण करना सम्भव नही है। सर्वेक्षण में प्रयोग में लाये जाने वाली शैक्षिक अनुसंधान में उपकरणों का प्रयोग किया जाता हैं। इनमें उपकरणों
में प्रश्नावली, साक्षात्कार, निरीक्षण, मनोवैज्ञानिक परीक्षणव अभिसूची इत्यादि। अनुसंधान में उपकरणों का चयन अध्ययन समस्या, अनुसंधान का उद्देश्य व स्वरूप पर निर्भर करता हैं। प्रस्तुत अनुसंधान में प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया गया है।

आकडों का विश्लेषण व परिणाम (Result and Data Analysis):

परिकल्पना न0 :1 : छात्रों के लिए माँ की स्वीकार्यता का समायोजन से कोई महत्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या:1.चयनित किशोरों के बीच समायोजन के साथ माता की स्वीकृति के बीच सम्बन्ध को दर्शाता है।

मापदंड	सांख्यिकीय मान				
	Mean	**SD**	**r**	**t**	**p**
माता की स्वीकृति	**13.19**	**3.30**	**+0.261**	**6.031**	**<0.01**
समायोजन	**43.50**	**10.30**			

परिणाम (Results): उपरोक्त तालिका में माता–पिता व छात्रों के सम्बन्धों पर माताओं की स्वीकृति का औसत स्कोर दर्शाती है। औसत मूल्य 13.19 एवं एस.डी. 3.30 है जबकि समायोजन का औसत स्कोर 43.50 और एस.डी. 10.30 है। यहां पर माता की स्वीकृति और समायोजन के बीच सहसम्बन्ध 0.261 है जो 1% सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

व्याख्याः– उपरोक्त से यह स्पष्ट होता है कि माता–पिता के बच्चों के लिए उनकी मां की स्वीकृति छात्रों के समायोजन के लिए महत्वपूर्ण और सकारात्मक योगदान देती है। स्पष्ट है कि नाम, स्वास्थ्य, सामाजिक घर और भावानात्मक समायोजन के लिए औसत स्कोर उच्च है।

परिकल्पना न0 2: छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का धार्मिक मूल्य से कोई महत्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है।

प्रचल (Parameter)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	t	r	p
धार्मिक मूल्य	**13.77**	**3.00**	**0.070**	**.56**	**0.05**
शैक्षिक उपलब्धि	**50.54**	**14.32**			

परिणाम (Results): सारणी संख्या - के अनुसार उपरोक्त तालिका में समायोजन स्कोर और धार्मिक मूल्य के बीच सहसम्बन्ध के औसत स्कोर को दर्शाती है। औसत समायोजन स्कोर 50.55 और एस डी 14.33 है। धार्मिक मूल्य का औसत 13.78 एवं एस डी 3.00. इस प्रकार कह सकते है कि जिन छात्रों का विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन मध्यम है, वे अपने धार्मिक मूल्यों से महत्वपूर्ण सम्बन्ध नही रखते है।

व्याख्या :– उपरोक्त से यह स्पष्ट होता है कि धार्मिक प्रवृति और मूल्य पर समायोजन का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष (Conclusion):- किसी भी शोध को उसके लक्ष्यों को ध्यान में रखकर तथा उसकी तार्किक कसौटी को परखने के लिए परिकल्पनाओं का निर्धारण किया जाता है। इस अध्याय में शोध–अध्ययन की परिकल्पनाओं द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्रों से सम्बन्धित माता–पिता, शिक्षकों ,प्रध्यानाध्यपकों व संस्था प्रधानों आदि के लिये सारांश और शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो को प्रस्तुत

किया गया है। साथ ही समस्या से सम्बन्धित सुझावों एवं भविष्य में समस्या से सम्बन्धित हो सकने वाले सुझावों पर चर्चा की गई है। जिनको अपनाकर या लागू करके छात्रों को अच्छा वातावरण प्रस्तुत किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथसूची

1. अग्रवाल, वी. पी.: राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भारतवर्ष की आधुनिक षिक्ष का आलोचनात्मक अध्ययन
2. शर्मा ,पं. श्रीराम : अपरिमित संभावनाओं का आधार मानवी व्यक्तित्व, प्रकाषक अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 2000
3. शर्मा, पं. श्रीराम : भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व,प्रकाशक अखण्ड ज्योति संस्थान,मथुरा,2000
4. जायसवाल, डॉ0 सीताराम : सामान्य मनोविज्ञान, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली पृ.– 36–45, 81 से 124
5. लाल बिहारी,रमन : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त रस्तौगी पब्लिकेशन,मेरठ 2015–16
6. लाल बिहारी, रमन : भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं आर.लाल बुक डिपो, मेरठ 2016 पृ. 617–607
7. कृष्णमूति, जे0 : संस्कृति का प्रश्न,कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, राजघाट फोट,वाराणसी, पृ0 72
8. कुमार, आनन्द
9. गारेट, एच.ई. डेस्क्रिप्ट स्टाटिटिस्कस, प्रेन्टिस हाल इंडिया, 1999
10. बालाचन्द्रन एवं सैम (2007) . "लाइफ सेटिसफेक्शन एण्ड एलीयेशन ऑफ एल्डरली मेल एण्ड फीमेल" भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, अंक 26 पृ0 26–31.
11. बासु, सारा (2011) . "ए स्टडी ऑफ मेण्टल हेल्थ एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ सैकेण्डरी स्कूल टीचर्स" भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, अंक 30 पृ0 19–25.
12. Adaval S.B. - An Investigation in to the qualities teacher under training Ph.D. (Edu.) Allahabad-1976.
13. Sinha P. . An Evaluative study to teacher education in Bihar. Ph.D. Edu. Patna.Uni.-1982
14. **सिंह, अरूण कुमार .** मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, नई दिल्ली – 2017।
15. पाण्डे रामशकल . विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2, अष्ठम संस्करण, 2018।
16. राय पारसनाथ तथा भटनागर . ''अनुसंन्धान परिचय'' लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, प्रकाशन आगरा, 3, 1973।